Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 5 | ISSUE : 7 | JULY 2019

'वर्तमान युग में विमर्शवाद : दलित विमर्श की उपलब्धियाँ व मूल्यांकन' (INTERPRETATIONISM IN THE PRESENT ERA : ACHIEVEMENTS AND EVALUATION OF DALIT DISCOURSE.)

DR. SANJEEV KUMAR [1]

[1] ASSISTANT PROF. IN HINDI, SDWG GOVT COLLEGE BEETAN, DISTT UNA (HP)-176601.

ABSTRACT:

दलित साहित्य हिन्दी की आज एक स्थापित धारा बन चुकी है । इस चर्चा करने के साथ-साथ दलित शब्द पर भी विचार कर लेना आवश्यक है। वैसे तो बहुत सी धारणायें हैं, जो भ्रान्तिपूर्ण हैं तथा समाज को भटकाती रही हैं, परन्तु यहाँ पर एक सुनिश्चित अर्थ का सामने आना आवश्यक है।

'दलित' किसे माना जाये ? इस सम्बंध में प्रमुखतः कई प्रकार के मत हैं। संकुचित अर्थ का क्षेत्र धार्मिक ग्रंथों तथा सामाजिक व्यवस्थाओं पर आधारित है जिसके अंतर्गत चतुर्थ वर्ग में आने वाली जातियों का वर्णन है। जबकि व्यापक अर्थ में दबाया हुआ व्यक्ति या समाज आता है, चाहे वह किसी भी जाति या धर्म से सम्बंध रखता हो। 'दलित' का शाब्दिक अर्थ है जिसका दलन या उत्पीड़न किया गया हो। यह उत्पीड़न चाहे शास्त्र द्वारा किया गया हो या शस्त्र द्वारा। दलित साहित्य में प्रयुक्त 'दलित' शब्द के अन्तर्गत संविधान द्वारा घोषित अनुसूचित जाति, जनजाति या पिछड़े वर्ग की जातियों के लोग ही नहीं आते अपितु 'दलित' शब्द एक संवेदन है, विचार है जिसका अर्थ दबाया गया से है, दबा हुआ नहीं।

KEYWORDS:

विमर्शवाद, दलित विमर्श, उपलब्धियाँ व मूल्यांकन

1. हिन्दी दलित साहित्य ऐतिहासिक परम्परा : मनुष्य समाज का जन्मदाता है। प्रत्येक साहित्यकार भी अपने अनुभवों के आधार पर साहित्य का सृजन समाज में रहकर ही करता है। यदि हम सूक्ष्म दृष्टि से देखें तो वर्तमान दलित साहित्य में उसी क्रान्ति का प्रभाव देखने को मिलता है, जो बहुत समय पहले सन्त साहित्य के रूप में आरम्भ हो चुकी थी।

2. दलित चेतना के आयाम : पिछले कुछ वर्षों से जब से समाज, साहित्य और राजनीति में दलितों ने किसी का पिछल्लग्गू बनना छोड़कर अपने क्रांतिकारी तेवर के साथ अपनी पृथक पहचान बनायी है तब से दलित चेतना को लेकर निरंतर लेखन और मंथन जारी है। दलित चेतना के इस उभार ने जैसे-जैसे एक सशक्त आंदोलन का रूप लिया है वैसे -वैसे इसके विरोध और समर्थन की प्रक्रिया भी तेज हुई है। दलित मुद्दों की उपेक्षा करने वाले लोग दलित प्रश्नों के प्रति गम्भीर हुए हैं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं ने दलित साहित्य और चेतना पर केंद्रित अपने विशेषांक प्रकाशित किए हैं।

हिन्दी कविता का आधुनिक काल निर्विवाद रूप से बहुत सी कठिन चुनौतियों का सामना करता हुआ विकास की राह पर अग्रसर है। कविता समय की पुकार है और समय के अनुसार ही अपने स्वभाव में ही नहीं बल्कि संवेदना में भी परिवर्तन करती रहती है। परन्तु दलित कविता पर चर्चा करना इतना आसान नहीं है, जितना कि दिखाई देता है। बीसवीं सदी के अंतिम दो दशकों में दलित कविता का जितना विकास हुआ, वह इस बात की ओर संकेत करता है कि वह अपनी समस्त सामर्थ्य के साथ इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुकी है, अब उसे एक परिधि में समेट पाना मुश्किल है।

पिछले कुछ वर्षों हिन्दी दलित कविता का पहला संकलन 'दर्द के दस्तावेज' प्रकाशित हुआ जिसका सम्पादन डॉ. एन. सिंह ने किया । इससे हिन्दी साहित्य में दलित कविता का विधिवत प्रवेश हुआ। दलित काव्यधारा के प्रवाह से हिन्दी के अभिजात्यवादी लेखकों में एक खलबली सी मच गई और वे कलम की तलवार लेकर इसके विरोध में खड़े हो गए कि साहित्य कभी 'दलित' हो ही नहीं सकता। वह सत्यं, शिवं और सुन्दरम् की अभिव्यक्ति है। परन्तु श्री लाल चंद 'राही', पुरुषोत्तम सत्यप्रेमी, सोहन पाल 'सुमनाक्षर', मोहनदास नैमिशराय, दयानंद बटोही, एन आर सागर इत्यादि हिन्दी दलित कविता और दलित साहित्य में ऐसे नाम है जो अपनी महत्त्वपूर्ण पहचान रखते हैं। एन आर सागर अपने काव्य संग्रह 'आजाद हैं हम' में लिखते हैं-

"जिसने तुम्हें दबाया, फेंका बदहाली के हाल में, उठो कसम लो, बदला लोगे तुम उससे हर हाल में ।"

हिन्दी दलित साहित्य के कहानीकारों में श्री ओम प्रकाश वाल्मीकि की प्रकाशित कहानियों में 'बैल की खाल', 'सलाम', 'मुंशी जी का गिलास, ग्रहण, सपना आदि लोकप्रिय कहानियों में से हैं। ऐसी ही हिन्दी की अनगिनत कहानियाँ दलित समाज का कथ्य लिए हुए हैं जिनका उद्देश्य किसी भी वाद- विवाद में न पड़कर तथा किसी भी धर्म जाति से घृणा न रखते हुए दलित जीवन की समस्याओं को बड़ी ही यथार्थ पूर्ण दृष्टि से चित्रित करना और उसको बड़ी ही सूक्ष्मता से उठाना है।

हिन्दी दलित साहित्य में उपन्यास का क्षेत्र बहुत बड़ा दिखाई नहीं देता। इसका महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि अधिकतर साहित्यकारों का झुकाव काव्य की ओर है। दलित साहित्य में जितनी काव्य और कहानी की प्रवृति दिखाई देती है, उतनी उपन्यास या किसी और विधा की ओर नहीं है। परन्तु फिर भी कुछ ऐसे उपन्यासकार हैं जिन्होंने दलित साहित्य को एक नयी दिशा प्रदान की है।

दलित साहित्य का मुख्य आधार संस्कृति, परम्परा और इतिहास में अपनी पहचान और अस्मिता को तलाशना है, जिसका आधार समानता, समता, बंधुत्व तथा स्वतंत्रता है। इसीलिये दलित साहित्य का उद्देश्य मानवतावाद है जिसके अंदर किसी भी प्रकार का भेदभाव नहीं पाया जाता । अब धीरे - धीरे यह दिखाई देने लगा है कि दलित साहित्य इक्कीसवीं सदी का साहित्य हो रहा है जिसमें हिन्दू वर्ण - व्यवस्था के ख़िलाफ़ विद्रोह है।

निष्कर्ष - यह कहना उचित ही है कि दलित साहित्य हिन्दी की आज एक स्थापित धारा बन चुकी है। परन्तु इसका आरम्भ विवादों के घेरे में रहा है। दलित किसे माना जाये ? इसको लेकर बहुत से मत सामने आये और साथ में तरह- तरह की परिभाषायें भी विद्वानों ने दीं। जो अपने -अपने स्थान पर लगभग सही सिद्ध होती हैं, क्योंकि उनका आधार कहीं विद्वानों का मत है, तो कहीं शब्दकोश की दृष्टि ।

हिन्दी दलित साहित्य के माध्यम से दलित समुदाय के अन्दर जो प्रगति हो रही है, वह साफ तौर पर दिखाई दे रही है, वह परिवर्तन चाहे मानव के हृदय के अन्दर हो या बाहर, दलित साहित्य का एक और जो प्रभाव देखने को मिलता है, वह सच की अभिव्यक्ति भी है। जिसके लिए बहुत हिम्मत की आवश्यकता है। दलित साहित्य के लेखकों में ही ऐसी हिम्मत दिखाई देती है। दलित साहित्य का आने वाला समय बहुत उज्जवल होगा, इसमें कोई सन्देह नहीं, उसका क्षेत्र सीमित न होकर असीमित होगा। उसे पाठकों की कमी भी नहीं रहेगी, परन्तु उसके लिए दलित साहित्य के रचनाकारों को अपने दायित्य का निर्वाह करते हुये आगे बढ़ना होगा तथा उन्हें इस समाज को भी समझना होगा ।

यह एक विचारणीय विषय है कि जब पूरा विश्व प्रगति की ओर अग्रसर है तो क्या हम समाज की अमीरी - गरीबी, ऊंच- नीच, दलित - सवर्ण पर बहस करते हुए अपने स्वार्थ की ही रोटियाँ सेंकते रहेंगे या कुछ इसे बदलने का प्रयास भी करेंगे। यदि ऐसा ही चलता रहा तो आने वाले समय में दलितों पर परिभाषायें एवं निष्कर्ष आते रहेंगे और हम सबका चिंतन व्यर्थ का चिंतन भर रह जायेगा।

REFERENCES

1. दलित चेतना और भारतीय समाज, डॉ. मौहम्मद अबीर उद्दीन, अंकित पब्लिकेशन, दिल्ली - 110009 ।

2. मेरा दलित चिंतन , डॉ एन सिंह, कंचन प्रकाशन, दिल्ली-110032 ।

3. हिन्दुत्व और दलित (कुछ प्रश्न, कुछ विचार), जयप्रकाश कर्दम, सागर प्रकाशन, दिल्ली - 110032 ।

4. इन्साइक्लोपीडिया।

शोधकर्ता :-
डॉ संजीव कुमार, सहायक प्रोफेसर हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय बीटन,
जिला -ऊना (हिमाचल प्रदेश)
दिनांक : 08 जून 2019